पेहेले फेरे थयूं आपणने, गौपद वछ संसार।
एणे पगले चालिए, जो तू पहेलो फेरो संभार।। २७ ।।

पहली बार ब्रज से रास में जाने के लिए हम भवसागर को एक छोटे-से गड्ढे के समान समझकर पार कर गए (घर, परिवार, सगे सम्बन्धियों को त्यागकर चले गए)। उसी प्रकार उसका ध्यान करते हुए हम इस बार भी भवसागर से पार चलें।

एटला माटे आ अजवालूं, वालेजीए कीधूं आ वार।
नरसैयां वचन प्रगट कीधां, कांई वृज तणा विचार।। २८ ।।

इतने के वास्ते ही धनी ने इस बार याद दिलाई है कि संसार कैसे छोड़ना है। नरसैयां के वचनों में भी ब्रज की लीला के विचार प्रगट किए हैं।

कहे इंद्रावती नरसैयां वचन, जो जोइए करीने चित।
धणिए जे धन आपियूं, कांई करी आपणने हित।। २९ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि नरसैयां के वचनों को भी यदि चित्त में विचार कर देखें तो धाम धनी ने अपनी भलाई के लिए ज्ञान का अमूल्य धन दिया है।

॥ प्रकरण ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ १४१ ॥

मोहजल से सावधान कर, माया से छूटने का उपाय बताकर, जीव को जागने का ज्ञान देकर अब क्या करना है, बतलाया जा रहा है।

राग धनाश्री

प्रेम सेवा वाले प्रगट कीधी, वृज तणी आ वार।
वचन विचारीने जोइए, कांई नरसैयां तणा निरधार।। १ ।।

ब्रज में हमने वालाजी को प्रेम से कैसे रिझाया था, वह ढंग इस बार बतलाया है। यदि नरसैयां के वचनों को देखें तो हमें यह निश्चय हो जायेगा।

श्रीधाम तणां साथ सांभलो, हूं तो कहूं छूं लागीने पाय।
जे रे मनोरथ कीधां आपणे, ते पूरण एणी पेरे थाय।। २ ।।

हे मेरे धाम के सुन्दरसाथ ! मैं आपके चरणों में लगकर कहती हूं, उसे सुनो। आपने जो चाह की थी वह सब प्रेम और सेवा से ही पूर्ण होगी।

वृजमां कीधी आपण वातडी, ते तां सघली मांहें सनेह।
काम करतां अति घणों, पण खिण नव छोड्यो नेह।। ३ ।।

ब्रज के अन्दर हम सब गोपियों के तन में थे और आपस में अपार प्रेम था। हमने माया के सब काम करते हुए भी अपने धनी से एक पल के लिए भी प्यार नहीं छोड़ा।

विविध पेरे सिणगार जो करतां, मन उलासज थाय।
मनना मनोरथ पूरण करतां, रंगभर रैणी विहाय।। ४ ।।

अपने धनी को रिझाने के लिए अपने मन में उमंग भरकर तरह-तरह से शृंगार करते थे और अपनी मनोकामना पूर्ण करने के लिए आनन्द से रातें बिताते थे।

Nijanand App

उठतां बेसतां रमता, वालो चितथी ते अलगो न थाय।
ज्यारे वन पधारतां, त्यारे खिण वरसां सो थाय।।५ ।।

ब्रज में उठते, बैठते, खेलते समय भी हम धनी को अपने चित्त से भुलाते नहीं थे। जिस दिन वालाजी गायों के साथ वन में जाते थे, उस दिन एक पल बिछुड़ना वर्षों के समान लगता था।

मांहोंमांहें विचारज करतां, वातज करतां एह।
आतम सहुनी एकज दीसे, जुजवी ते दीसे देह।। ६ ।।

जब वालाजी वन में चले जाते थे, तो उनके वियोग की बातें हमारी आपस में एकसी ही होती थीं, जिससे यह दीखता था कि हमारे तन ही अलग-अलग हैं, पर आत्मा सबकी एक है।

निस दिवस वालाजीसों वातो, रामत करतां जाय।
खिणमात्र जो अलगा थैए, तो विछोडो खिण न खमाय।।७ ।।

रात-दिन हम वालाजी के साथ ही बातें करते थे तथा खेल खेलते थे। इसलिए उनसे एक पल का भी वियोग हमसे सहन नहीं होता था।

विविध विलास वालाजीसों करतां, पूरण मनोरथ थाय।
ज्यारे वाछरडा लई वन पधारे, त्यारे रोवंतां दिन जाय।।८ ।।

हम तरह-तरह से आनन्द की लीला वालाजी के साथ करके अपने मन की इच्छा पूरी करते थे, पर जब वालाजी बछड़ों के साथ वन में जाते थे, तो वह दिन हमारा रोते-रोते बीतता था।

दाण लीला नी रामत करतां, माथे मही माखणनो भार।
वचन रंगनां उथला वालतां, रमतां वन मंझार।।९ ।।

हम अपने सिर पर दही और माखन की मटकी लेकर दान-लीला का खेल खेलते थे तथा वन के अन्दर अटपटे वचन बोलकर आनन्द लेते थे।

वृज नरसैए प्रगट कीधूं, अति घणे वचन विवेक।
ए वचन जोईने चालिए, तो आपण थैए विसेक।।१० ।।

नरसैयां ने अपने वचनों में ब्रजलीला का विस्तार से वर्णन किया है और उन वचनों को देखकर यदि हम सोचें तो हम उससे भी अधिक वालाजी से प्रेम करेंगे।

वृजलीला अति मोटी छे, जो जो नरसैयां वचन प्रमाण।
ए पगलां सर्वे आपणां, तमे जाणी सको ते जाण।।११ ।।

नरसैयां के वचनों में ब्रज की लीला की बड़ी महिमा है। यदि समझ सको तो समझो। यह प्रेम का मार्ग अपना है (जो हमारे बिना कोई जानता नहीं है)।

कहे इंद्रावती सुणो रे साथ जी, इहां विलंब कीधांनी नहीं वार।
ए अजवालूं सर्वे कीधूं मारे वाले, आपणने आ वार।।१२ ।।

श्री इन्द्रावतीजी सब सुन्दरसाथ से कहती हैं कि अपने धनी ने इस बार ज्ञान से पूरा प्रकाश कर दिया है और अब देर करने का समय नहीं है।

।। प्रकरण ।। ४ ।। चौपाई ।। १५३ ।।

Nijanand App